AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Access & Indexed
Volume 05 | Issue 11 | November 2024 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 57-66

प्रवास और घरेलू महिला श्रमिकों पर इसका प्रभाव

सरिता कुमारी[1] *, डॉ.मनीष पराशर[2]

1. शोधार्थी, स्कूल ऑफ ज्योग्राफिकल स्टडीज,आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

2. सहायक प्रोफेसर, स्कूल ऑफ ज्योग्राफिकल स्टडीज,आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

शोध सारांश:

यह शोध पत्र महिला घरेलू श्रमिकों के प्रवास और उनके सामने आने वाली जटिल चुनौतियों का विश्लेषण करता है, जिसमें प्रवास के लैंगिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। घरेलू महिला श्रमिक परिवारों में देखभाल, सफाई और प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण कार्य निभाती हैं। उनके योगदान के बावजूद, इन महिलाओं को कार्यस्थल पर एकाकीपन, नियोक्ताओं पर निर्भरता और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें अक्सर असुरक्षित कार्य स्थितियों, कम वेतन, लंबे काम के घंटे, और अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा का सामना करना पड़ता है। प्रवास के प्रमुख कारणों में आर्थिक आवश्यकताएँ, स्थानीय रोजगार की कमी, और सामाजिक दबाव शामिल हैं। हालांकि प्रवास से महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है, लेकिन उन्हें शोषण और दुर्व्यवहार का भी खतरा होता है। इस अध्ययन में पटना की 100 घरेलू महिला श्रमिकों पर आधारित एक सर्वेक्षण और साक्षात्कार शामिल हैं, जिसमें आयु, प्रवास के कारण और घर से दूरी के आधार पर प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। परिणामों से पता चलता है कि युवा महिलाओं में आर्थिक कठिनाई प्रवास का मुख्य कारण है, जबकि वृद्ध महिलाएं परिवार के समर्थन के लिए प्रवास करती हैं। अंत में, इस शोध में प्रवासी श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा और उनकी कार्य स्थितियों में सुधार के लिए नीतियों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। समाज में जागरूकता और कानूनी समर्थन बढ़ाने से घरेलू काम को सम्मानजनक और आवश्यक मान्यता मिल सकती है, जिससे घरेलू महिला श्रमिकों और उनके द्वारा समर्थित परिवारों को लाभ होगा।

मुख्य शब्द: प्रवासी महिला श्रमिक, घरेलू कार्य, आर्थिक स्वतंत्रता, श्रम शोषण, सामाजिक सुरक्षा

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Sarita Kumari Research Scholar, School of Geographical Studies AryabhattaKnowledge University, Patna India E-mail: saritakumaripwc@gmail.com	

परिचय :

अपने बहुमूल्य योगदान के बावजूद, प्रवासियों को व्यापक, परस्पर विरोधी प्रकार के भेदभाव का सामना करना पड़ता है जो उनकी यात्रा के सभी चरणों में उनकी भलाई और सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। प्रवास एक लैंगिक प्रक्रिया है और महिलाओं और पुरुषों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करती है: यह श्रम के वैश्वीकृत लैंगिक विभाजन में निहित है जिसमें घरेलू और देखभाल कार्य जैसे विशिष्ट सेवा क्षेत्रों में महिला प्रवासी श्रमिकों की मांग है। प्रवास के परिणामस्वरूप महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्रता मिलती है, लेकिन साथ ही उन्हें कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है लैंगिक रूढ़िवादिता महिलाओं की स्वायत्तता और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को सीमित करती है, जिससे उनके मानवाधिकारों के व्यवस्थित उल्लंघन के प्रति उनकी भेद्यता बढ़ जाती है। लगभग 13 प्रतिशत प्रवासी महिलाएँ घरेलू काम में रोज़गार पाती हैं, जहाँ वे दुनिया भर के परिवारों को देखभाल करने वाली, सफ़ाई करने वाली, घर की देखभाल करने वाली और नैनी के रूप में अमूल्य सेवाएँ प्रदान करती हैं। साथ ही, प्रवासी महिला घरेलू कामगारों को श्रम और मानवाधिकार हनन का उच्च जोखिम भी झेलना पड़ता है। उनकी कमज़ोरी का मूल कारण अलगाव और निर्भरता है: उनका कार्यस्थल अक्सर उनका निवास स्थान भी होता है, और वे देश में रहने के लिए अपने वर्क परमिट के लिए अपने नियोक्ता पर निर्भर होती हैं। यह निर्भरता एक असमान शक्ति गतिशीलता बनाती है जिसके परिणामस्वरूप अनुचित व्यवहार और भेदभाव हो सकता है। जिसमें मज़दूरी रोकना या न देना, अत्यधिक काम के घंटे और कार्यभार, साप्ताहिक आराम न करना, भोजन से वंचित करना, रहने की अपर्याप्त स्थिति, कारावास और अपने परिवारों के साथ सीमित संचार साथ ही शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और यौन शोषण शामिल हैं। भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, यह पाया गया कि अंतरिम निवास स्थान के आधार पर 309 मिलियन व्यक्ति प्रवासी थे, जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग 30% है। 1971 की जनगणना (159 मिलियन व्यक्ति) के अनुसार संबंधित आंकड़े दर्शाते हैं कि यह दर्ज की गई आंतरिक प्रवासियों की संख्या से दोगुना है। इससे पता चलता है कि पिछले तीन दशकों में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ने जनसंख्या की गतिशीलता को बहुत प्रभावित किया है। ये प्रवास के मुद्दों पर सर्वेक्षण किए गए कुछ साहित्य हैं जो भारत में प्रवास के विश्लेषण के लिए मूलभूत रूपरेखा बनाते हैं।

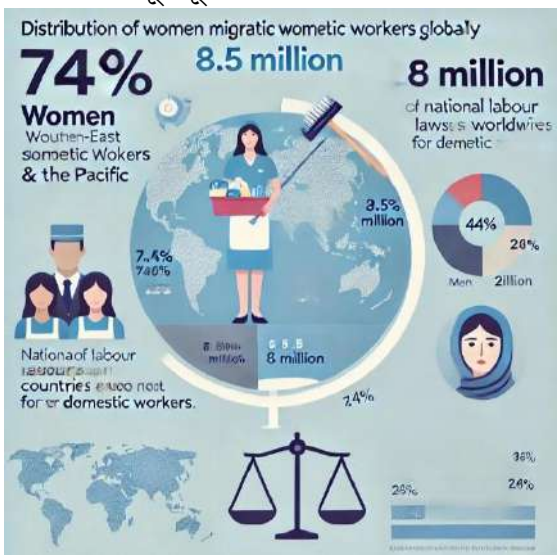

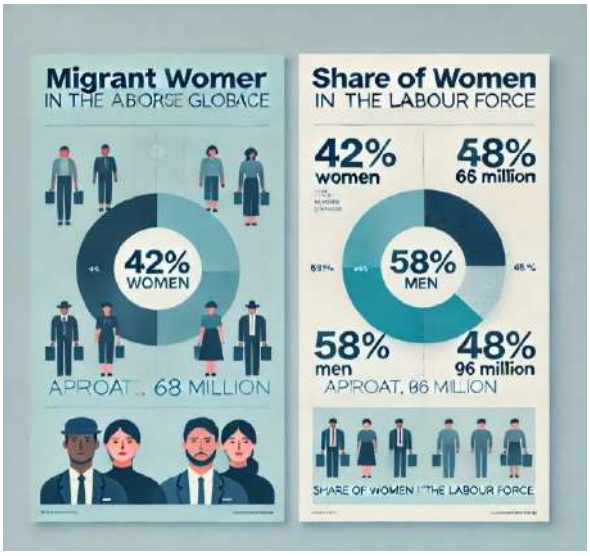

स्रोत: *How migration is a gender equality issue*. UN Women. (n.d.).

प्रवासी घरेलू कामगारों को सामाजिक सुरक्षा तक बहुत कम या बिल्कुल भी पहुँच नहीं है और अक्सर उनके पास केवल आपातकालीन स्वास्थ्य सेवा का ही सहारा होता है। कुछ देशों में, महिला प्रवासी घरेलू कामगारों को गर्भावस्था परीक्षण कराने के लिए मजबूर किया जा सकता है; जो गर्भवती पाई जाती हैं उन्हें उनकी नौकरी से निकाला जा सकता है। कोविड-19 महामारी के दौरान, महिला प्रवासी घरेलू कामगारों को अपनी नौकरी खोने का विशेष जोखिम रहा है क्योंकि वे अनौपचारिक रूप से कार्यरत हैं, अक्सर अपंजीकृत होती हैं और राष्ट्रीय श्रम सुरक्षा से बाहर रहती हैं। भाषा और सांस्कृतिक अंतर के कारण सामाजिक अलगाव और सटीक जानकारी की सीमित उपलब्धता ने उनके सामने आने वाली कमज़ोरियों को बढ़ा दिया है। महिलाएं अक्सर अपने मूल देशों में यौन और लिंग आधारित हिंसा और हानिकारक प्रथाओं से बचने के लिए पलायन करती हैं, जिसमें कम उम्र में और जबरन शादी और महिला जननांग विकृति शामिल है। फिर भी, प्रवासी महिलाएं - विशेष रूप से अनियमित प्रवास स्थिति वाली महिलाएं - तस्करों, तस्करों, सीमा अधिकारियों और अन्य राज्य अभिनेताओं, साथ ही साथी प्रवासियों के हाथों यौन और लिंग आधारित हिंसा के बढ़ते जोखिम का सामना करती हैं। उन्हें शोषण का भी खतरा है, जिसमें मजदूरी में बेचा जाना या यात्रा के लिए मार्ग, आश्रय, जीविका या पैसे पाने के लिए जीवित रहने के लिए सेक्स करने के लिए मजबूर होना शामिल है। कुछ महिलाओं और लड़कियों के लिए, उनके प्रवास यात्रा पर बलात्कार का प्रत्याशित जोखिम इतना अधिक है कि वे एहतियात के तौर पर पलायन करने से पहले गर्भनिरोधक लेती हैं। आगमन पर, प्रवासी महिलाओं को कार्यस्थल, सार्वजनिक स्थानों और उनके घरों में उनके अपने परिवार के सदस्यों द्वारा यौन और लिंग आधारित हिंसा का सामना करना पड़ सकता है।

प्रवास के प्रमुख कारण :-

- आर्थिक अवसरों की तलाश
- शहरी क्षेत्रों में बेहतर जीवन स्थितियां
- ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी और गरीबी
- सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक कारण

घरेलू महिला श्रमिकों पर प्रवास का सकारात्मक प्रभाव :-

- रोजगार के अवसरों के माध्यम से आर्थिक स्वतंत्रता
- पारिवारिक आय में वृद्धि
- सामाजिक स्थिति में सुधार और आत्मनिर्भरता
- नए कौशल और शिक्षा के अवसर

घरेलू महिला श्रमिकों पर प्रवास का नकारात्मक प्रभाव :-

- शोषण और असुरक्षित कामकाजी माहौल
- काम के लंबे घंटे, कम वेतन और सामाजिक सुरक्षा की कमी।
- मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव
- अकेलापन और अस्थिर जीवनशैली से मानसिक तनाव
- अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं के कारण स्वास्थ्य समस्याएं।
- सामाजिक अलगाव (प्रवास के कारण परिवार और सामाजिक संबंधों में दूरी आती है, जिससे महिलाएं सामाजिक अलगाव महसूस कर सकती हैं।)

साहित्यिक समीक्षा :-

विद्वानों ने प्रवास और उससे संबंधित शब्दों की स्पष्ट रूप से परिभाषा दी है। सामान्यतः प्रवास शब्द का अर्थ शारीरिक स्थान में आबादी के सभी प्रकार के आंदोलन से है, जिसमें आवास या निवास स्थान में परिवर्तन की अपेक्षा निहित है। निवास का यह परिवर्तन एक गांव या शहर से दूसरे गांव या शहर में, या एक जिले या जिले के बीच, या दो राज्यों के बीच या देश के बाहर एक महीने, दो महीने या तीन महीने से अधिक की अवधि में हो सकता है। मानव प्रवास के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण विभिन्न विषयों के विद्वानों ने किया है और प्रवास अध्ययन से संबंधित साहित्य में काफी वृद्धि हुई है। वास्तव में, ज्ञान के इस पहलू ने अंतरविषयक स्वरूप ले लिया है और इस प्रकार के अध्ययन में अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल, जनसंख्या विज्ञान, चिकित्सा और कई अन्य संबंधित क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है, और इन सभी पहलुओं में प्रशिक्षण प्राप्त करना बहुत कम लोगों के लिए संभव होता है। निश्चित रूप से विद्वानों ने प्रवास की घटनाओं के अंतरविषयक अध्ययन के महत्व को समझा है। चूँकि प्रवास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन विभिन्न विषयों के विद्वानों द्वारा किया गया है, इसलिए प्रवास की परिभाषा, प्रकार, प्रवासन प्रेरक कारक, प्रवास के परिणाम और प्रवास के प्रभावों के बारे में उनके दृष्टिकोण का अलग-अलग तरीके से विश्लेषण किया गया है और विभिन्न विषयों के विद्वानों के विचारों की समीक्षा किसी भी अध्ययन में आवश्यक है। निश्चित रूप से सभी विषयों के विद्वानों के कार्यों का उल्लेख और समीक्षा करना संभव नहीं है। इसलिए वर्तमान जांच में केवल महत्वपूर्ण अध्ययनों को ध्यान में रखा गया है।

प्रवास के स्रोत के रूप में शहरीकरण के तहत, कुंडू ने प्राकृतिक वृद्धि, नए शहरों की (शुद्ध) जनसंख्या और मौजूदा शहरों के विस्तार और उनमें शहरों के विलय के कारण वृद्धि के साथ-साथ शुद्ध ग्रामीण-शहरी प्रवास के योगदान का अनुमान लगाया। उन्होंने तर्क दिया कि कुछ राज्यों में प्रवासी विरोधी पूर्वाग्रह और बहिष्करणकारी शहरीकरण नीतियों के कारण प्रवास की भूमिका में और गिरावट आने की उम्मीद की जा सकती है।

प्रवास प्रक्रिया में दो स्थान शामिल होते हैं: मूल स्थान और गंतव्य स्थान। वह स्थान जहाँ से एक प्रवासी बाहर जाता है उसे 'डोनर सोसाइटी' कहा जाता है और प्रवासियों का गंतव्य स्थान 'होस्ट सोसाइटी' कहलाता है। एक सामान्य मूल और गंतव्य स्थान वाले प्रवासियों के समूह को 'माइग्रेशन स्ट्रीम' और 'माइग्रेशन करंट' कहा जाता है और इस प्रकार की स्ट्रीम के बाद सामान्यतः काउंटर स्ट्रीम या काउंटर करंट होता है।'ग्रॉस माइग्रेशन' का अर्थ है किसी क्षेत्र के कुल प्रवासी और अप्रवासी की संख्या, और कभी-कभी उस क्षेत्र के लिए कुल प्रवाह का संदर्भ होता है जब विश्लेषण प्रवास धारा से

जुड़े इकाइयों तक सीमित होता है। दोनों स्ट्रीम्स और काउंटर स्ट्रीम्स का कुल आकार इन दोनों क्षेत्रों के बीच का कुल आदान-प्रदान कहलाता है और दोनों के बीच का अंतर नेट स्ट्रीम या नेट आदान-प्रदान कहलाता है।

राष्ट्रीय ग्रामीण श्रम आयोग (एनसीआरएल) की रिपोर्ट, 1991 से पता चलता है कि कम या बिना जमीन वाले मजदूरों और किसानों में मौसमी मजदूरों के रूप में प्रवास करने की उच्च प्रवृत्ति है। शिक्षा के संदर्भ में, उच्च शिक्षित और कम शिक्षित दोनों के बीच प्रवास दर अधिक है, जबकि मौसमी प्रवासियों में निरक्षरों की अधिकता है।

देशिंगकर एट अल. द्वारा मध्य प्रदेश में किए गए सर्वेक्षण से पता चला है कि गरीबों के लिए चक्रीय प्रवास अधिक संचयी हो गया है, क्योंकि इससे काम खोजने की अनिश्चितता कम हुई है, वेतन में वृद्धि हुई है और ठेकेदारों पर निर्भरता कम हुई है, लेकिन कौशल या मजबूत सामाजिक नेटवर्क वाले लोगों को अधिक लाभ हुआ है। आंतरिक प्रवास को अब भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था के सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता है

प्रवास की परिभाषा में ''ली ''ने स्थायी या अर्ध-स्थायी निवास परिवर्तन पर जोर दिया। इस प्रकार उनकी परिभाषा में दूरी पर प्रतिबंध लगाया गया है और सभी गतिविधियों के स्वैच्छिक या अनैच्छिक स्वभाव को प्रतिबंधित किया गया है और आंतरिक या बाहरी प्रवास के बीच कोई अंतर नहीं किया गया है। उनकी परिभाषा सभी प्रकार की स्थानिक मोबिलिटी को स्पष्ट नहीं करती। मोबिलिटी, वास्तव में, मूल स्थान और गंतव्य स्थान के बीच स्थानिक विभेदन से संबंधित है। परिणामस्वरूप प्रवास का अर्थ भौतिक स्थान में आबादी के सभी प्रकार के आंदोलनों से है।

कैपलो की राय में, प्रवास को निवास के परिवर्तन के रूप में माना जाता है और इसमें आवश्यक रूप से किसी भी प्रकार का पेशेवर परिवर्तन शामिल नहीं होना चाहिए। निश्चित रूप से यह एक प्रकार से दूसरे प्रकार में पेशेवर बदलाव से संबंधित है। प्रवास के मुख्य दिशाएं अधिक या कम निरंतर आंदोलनों से दर्शाई जाती हैं जैसे ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर, स्थिर जनसंख्या वाले क्षेत्रों से शहरी व्यावसायिक अवसरों के केंद्र की ओर, घनी बसी हुई देशों से और शहरों के केंद्र से उनके उपनगरों की ओर।

हाल के दशकों में भारत में शहरी विकास के कारण प्रवास के मुद्दों पर भगत और मोहंती2 द्वारा किया गया अध्ययन महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, उनके निष्कर्षों से पता चलता है कि 1990 के दशक के दौरान प्रवास का योगदान बढ़ा है।

मंगलम ने एक अन्य परिभाषा का सुझाव दिया। उनके अनुसार, प्रवास एक सामूहिकता का एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की ओर अपेक्षाकृत स्थायी प्रस्थान है, जो प्रवासियों द्वारा एक श्रेणीबद्ध सेट के मूल्यित उद्देश्यों के आधार पर निर्णय लेने के द्वारा होता है और प्रवासियों की अंतःक्रिया प्रणाली में परिवर्तन का परिणाम होता है।

रितु शर्मा (2017) ने 'वूमन, वर्क एंड जेंडर इक्विटी' में घरेलू महिला श्रमिकों की सामाजिक मान्यताओं और लैंगिक असमानता पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार, घरेलू कामकाजी महिलाओं को समाज में कमतर समझा जाता है, और उनके श्रम को अक्सर अवमूल्यित किया जाता है। यह स्थिति उनकी सामाजिक स्थिति को और भी दयनीय बना देती है।

सुहासिनी राव (2014) ने 'लेबर लॉ एंड डोमेस्टिक वर्क' में बताया कि भारतीय कानूनी प्रणाली में घरेलू महिला श्रमिकों के लिए पर्याप्त संरक्षण नहीं है। कानूनी दायरे में उनकी स्थिति अस्पष्ट और कमजोर है, जिससे उन्हें उचित वेतन, कामकाजी सुरक्षा और सम्मान प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

अध्ययन क्षेत्र :-

पटना दुनिया के सबसे पुराने लगातार बसे हुए स्थानों में से एक है। पटना नगर निगम (पीएमसी) का क्षेत्र अक्षांश 25°33'10" से 25°39'03" उत्तर और देशांतर 85°03'16" से 85°16'10" पूर्व के बीच स्थित है और यह गंगा नदी के दक्षिणी तट पर बसा है। पटना नगर निगम का विस्तार पूर्व से पश्चिम तक लगभग 21.5 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण तक लगभग 11 किलोमीटर है। इस निगम का क्षेत्र एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र है, जहां अधिकांश वाणिज्यिक प्रतिष्ठान प्रमुख सड़कों और मुख्य मार्गों के किनारे स्थित हैं। शहर में वाणिज्यिक और आवासीय क्षेत्रों का व्यापक मिश्रित भूमि उपयोग पाया जाता है। पटना नगर निगम का प्राकृतिक विकास पश्चिम दिशा में हुआ है, जबकि इसका पुराना भाग शहर के पूर्वी हिस्से में स्थित है। पीएमसी का यह केंद्रीय क्षेत्र अत्यधिक जनसंख्या की समस्या से जूझ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भौतिक बुनियादी ढांचे और यातायात पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है। पीएमसी के केंद्रीय और पश्चिमी हिस्से में विकसित नए क्षेत्र में भूखंड विकास और अपार्टमेंट मकानों का मिश्रण है। गंगा नदी के दक्षिणी तट पर पटना का स्थान शहर के रैखिक विकास के लिए आधार प्रदान करता है। पटना गंगा नदी के प्राकृतिक तटबंध पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी औसत ऊंचाई 53 मीटर है। पटना पश्चिम में सोन नदी और उत्तर में पवित्र गंगा नदी से घिरा है, दक्षिण में पुनपुन नदी के बाढ़ के मैदान हैं। पुनपुन नदी गंगा के समानांतर बहती है और फतुआ से लगभग 12 किमी पूर्व में उससे मिलती है। पटना नगर निगम (पीएमसी) लगभग 108.164 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करता है और इसे 75 वार्डों में विभाजित किया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या 16,83,200 है, और पीएमसी का जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 16,741 व्यक्ति है क्षेत्रफल की दृष्टि से. 2011 की जनगणना के अनुसार, पटना जिला बिहार का सबसे अधिक आबादी वाला जिला और भारत का पंद्रहवाँ सबसे अधिक आबादी वाला जिला है। पीएमसी क्षेत्र में कुल साक्षरता 1,234,931 लोग हैं, (83.37%, जनगणना- 2011)। इनमें 685,849 पुरुष साक्षर और 549,082 महिला साक्षर हैं। लिंग के आधार पर यहां 87% पुरुष और 79% महिला आबादी साक्षर है। पिछले दशक (2001-2011) में शहर की समग्र साक्षरता में 2.2% की वृद्धि हुई है।

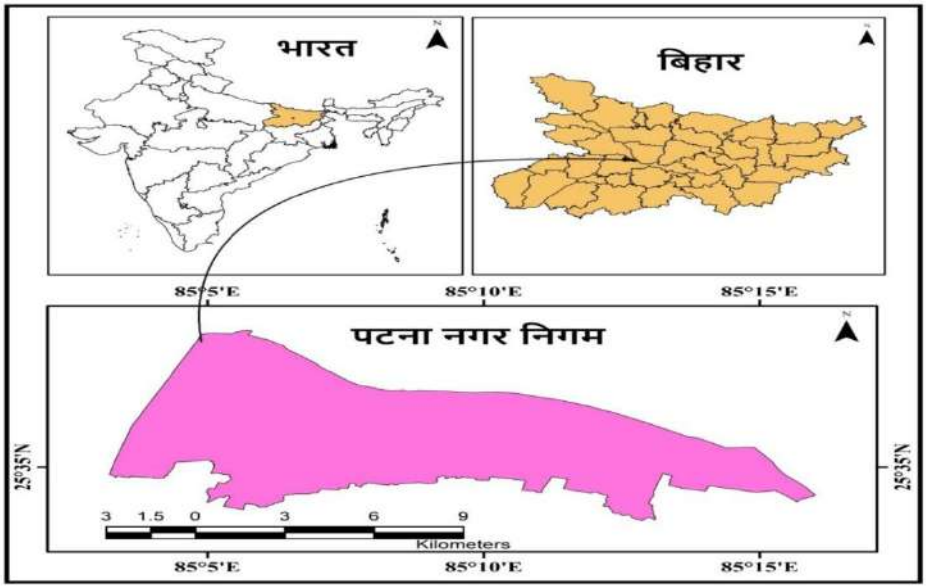

उधेश्य:- इस शोध का मुख्य उद्देश्य घरेलू महिला श्रमिकों के प्रवास के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना है।

अनुसंधान विधि :-

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित है। प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए, आंतरिक प्रवास के विभिन्न पहलुओं से निपटने वाली एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की गई थी। नमूने में 100 उत्तरदाता शामिल हैं। प्राथमिक सर्वेक्षण मुख्य रूप से अवलोकन और साक्षात्कार पर आधारित है, जो प्रश्नावली विधियों के माध्यम से किया गया है। अपनाई जाने वाली विधि सुविधाजनक नमूनाकरण और स्नोबॉल नमूनाकरण है। स्नोबॉल नमूनाकरण में आमतौर पर सुविधा के अनुसार एक प्रारंभिक प्रवासी कार्यकर्ता का चयन किया जाता है। साक्षात्कार के बाद, प्रवासी श्रमिकों को अन्य प्रवासी श्रमिकों की पहचान करने के लिए कहा जाता है। इस पद्धति का उपयोग अन्य प्रवासी श्रमिकों तक पहुँच प्राप्त करने के लिए किया गया है क्योंकि उन्हें ट्रैक करने से जुड़ी स्थान संबंधी कठिनाइयाँ होती हैं। स्नोबॉल नमूनाकरण का मुख्य लाभ यह है कि इससे प्रवासी श्रमिकों का पता लगाने की संभावना काफी हद तक बढ़ जाती है। डेटा व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा एकत्र किया गया है इस शोध पत्र में साक्षात्कार के माध्यम से प्रवासी घरेलू महिला कामगारों के प्रवास करने के प्रमुख कारणों का पता लगाने की कोशिश की गई हैं। साक्षात्कार से प्राप्त विभिन्न आंकड़ों को समायोजित कर तथा उन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित कर माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल (Ms Excle) के द्वारा विभिन्न प्रकार के डायग्राम एवं चाटों के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

अनुसंधान विधि :-

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित है। प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए, आंतरिक प्रवास के विभिन्न पहलुओं से निपटने वाली एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की गई थी। नमूने में 100 उत्तरदाता शामिल हैं। प्राथमिक सर्वेक्षण मुख्य रूप से अवलोकन और साक्षात्कार पर आधारित है, जो प्रश्नावली विधियों के माध्यम से किया गया है। अपनाई जाने वाली विधि सुविधाजनक नमूनाकरण और स्नोबॉल नमूनाकरण है। स्नोबॉल नमूनाकरण में आमतौर पर सुविधा के अनुसार एक प्रारंभिक प्रवासी कार्यकर्ता का चयन किया जाता है। साक्षात्कार के बाद, प्रवासी श्रमिकों को अन्य प्रवासी श्रमिकों की पहचान करने के लिए कहा जाता है। इस पद्धति का उपयोग अन्य प्रवासी श्रमिकों तक पहुँच प्राप्त करने के लिए किया गया है क्योंकि उन्हें ट्रैक करने से जुड़ी स्थान संबंधी कठिनाइयाँ होती हैं। स्नोबॉल नमूनाकरण का मुख्य लाभ यह है कि इससे प्रवासी श्रमिकों का पता लगाने की संभावना काफी हद तक बढ़ जाती है। डेटा व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा एकत्र किया गया है इस शोध पत्र में साक्षात्कार के माध्यम से प्रवासी घरेलू महिला कामगारों के प्रवास करने के प्रमुख कारणों का पता लगाने की कोशिश की गई हैं। साक्षात्कार से प्राप्त विभिन्न आंकड़ों को समायोजित कर तथा उन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित कर माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल (Ms Excle) के द्वारा विभिन्न प्रकार के डायग्राम एवं चाटों के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या:-

प्रस्तुत शोध पत्र के उधेश्य का गहन पूर्वक अध्ययन एवं सर्वेक्षण करने के उपरांत निम्नलिखित विश्लेषण एवं व्याख्या प्राप्त की गई है।

तालिका **1**

आपका गृह कितने किलोमीटर की दूरी पर है।	आयु (वर्ष)			
	15 – 25	26-35	36-45	45 से अधिक
10km -20km	1	2	0	0
20km - 30km	3	4	0	2
30km - 40km	5	5	3	3
40km - 50km	14	18	7	5
50km से अधिक	4	15	8	1

इस तालिका का गहन विश्लेषण घरेलू कामगारों की विभिन्न आयु वर्गों में आवागमन की दूरी और कार्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 40-50 किमी दूरी पर सबसे अधिक घरेलू कामगार रहते हैं, खासकर 26-35 वर्ष की आयु वाले, जो इस आयु वर्ग के अधिकतर लोगों में काम के लिए लंबी दूरी तय करने की सक्रियता और सामर्थ्य को दर्शाता है। 50 किमी से अधिक दूरी पर रहने वाले लोग भी बड़ी संख्या में हैं, लेकिन उनमें भी प्रमुखता से 26-35 और 36-45 आयु वर्ग के लोग शामिल हैं। इसके विपरीत, 10-20 किमी की दूरी पर निवास करने वाले घरेलू कामगारों की संख्या सबसे कम है, जो यह संकेत देता है कि कम दूरी पर रहने वाले लोग घरेलू काम के लिए अन्य विकल्प चुन सकते हैं या इस दूरी पर आवागमन को प्राथमिकता नहीं देते।

आयु वर्ग के अनुसार, 26-35 आयु वर्ग के कामगारों में सबसे अधिक सक्रियता है, खासकर लंबी दूरी के आवागमन के लिए। वहीं, 45 वर्ष से अधिक आयु के लोग अपेक्षाकृत कम संख्या में हैं, जो संभवतः इस आयु वर्ग में लंबी दूरी तय करने की सीमाओं या कम सक्रियता को दर्शाता है। इस प्रकार, तालिका से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू काम के लिए आवागमन में आयु, दूरी और सामर्थ्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहां युवा और मध्य आयु वर्ग के लोग अधिक दूरी तय करने के लिए तैयार रहते हैं, जबकि वरिष्ठ आयु
वर्ग के लोग कम दूरी को प्राथमिकता देते हैं।

तालिका **2**

प्रवास का आपका मुख्य कारण क्या था?	आयु (वर्ष)			
	15 – 25	26-35	36-45	45 से अधिक
रोजगार	8	5	0	0
आर्थिक समस्या	18	31	11	9
परिवार की देखभाल,	1	8	7	2

इस तालिका का विश्लेषण विभिन्न आयु वर्गों के लोगों के प्रवास के मुख्य कारणों को दर्शाता है, जिसमें रोजगार, आर्थिक समस्या, और परिवार की देखभाल प्रमुख कारण हैं। सबसे अधिक संख्या में प्रवास करने का कारण आर्थिक समस्या है, जिसमें 26-35 आयु वर्ग के 31 लोगों के साथ यह प्रमुख कारण बनकर उभरता है। यह स्पष्ट करता है कि इस आयु वर्ग के लोग आर्थिक कठिनाइयों के चलते अन्य स्थानों की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर हैं। इसके बाद, 15-25 वर्ष के लोगों में भी आर्थिक समस्याएं मुख्य कारण हैं, जिसमें 18 लोगों ने इसे प्रवास का कारण बताया। 45 से अधिक आयु वर्ग में भी आर्थिक समस्या प्रवास का एक प्रमुख कारण है, लेकिन संख्या अपेक्षाकृत कम है, जो इंगित करता है कि वरिष्ठ नागरिकों में प्रवास की प्रवृत्ति कम होती है। रोजगार का कारण 15-25 और 26-35 आयु वर्ग में अपेक्षाकृत अधिक है, विशेष रूप से 15-25 आयु वर्ग के 8 लोग प्रवास के लिए रोजगार का कारण बताते हैं। इसका मतलब है कि युवा लोग रोजगार की तलाश में अधिक प्रवास करते हैं, क्योंकि यह उनके करियर निर्माण का समय होता है। परिवार की देखभाल का कारण मुख्य रूप से 26-35 और 36-45 आयु वर्ग के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें क्रमशः 8 और 7 लोग इस कारण से प्रवास करते हैं। यह इंगित करता है कि इस आयु वर्ग के लोग परिवार की देखभाल के प्रति अधिक जिम्मेदार महसूस करते हैं, विशेष रूप से तब, जब उनके पास अपने परिवार का पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी होती है।

अतः, इस तालिका से निष्कर्ष निकलता है कि आयु वर्ग के अनुसार प्रवास के कारणों में भिन्नता है। युवा वर्ग (15-25) मुख्य रूप से रोजगार के लिए प्रवास करता है, मध्य आयु वर्ग (26-35) आर्थिक समस्याओं के चलते प्रवास करता है, और थोड़ी अधिक उम्र के लोग परिवार की देखभाल के लिए प्रवास को प्राथमिकता देते हैं। 45 से अधिक उम्र में, प्रवास की दर कम है, जिससे यह समझ आता है कि इस आयु वर्ग के लोग प्रवास के बजाय अपने स्थानीय क्षेत्र में रहने को प्राथमिकता देते हैं।

तालिका **3**

आपने घरेलू काम के लिए कब प्रवास किया?	आयु (वर्ष)			
	15 – 25	26-35	36-45	45 से अधिक
1- 3 साल	11	8	0	0
3 - 5 साल	14	23	3	2
5 - 7 साल	2	10	9	3
7 साल से अधिक	0	3	6	6

इस तालिका का विश्लेषण बताता है कि घरेलू काम के लिए प्रवास की अवधि आयु के साथ बदलती है, और जैसे-जैसे लोग बड़े होते जाते हैं, प्रवास में स्थिरता बढ़ती है। 15-25 आयु वर्ग के अधिकतर लोग हाल ही में (1-3 साल) प्रवासित हुए हैं, जो नए अवसरों की तलाश में कम अवधि के प्रवास का संकेत देता है। 26-35 आयु वर्ग में, अधिकांश लोगों ने 3-5 साल से प्रवास किया हुआ है, जो आर्थिक स्थिरता और लंबे समय तक काम में बने रहने की उनकी कोशिश को दर्शाता है। 36-45 और 45 से अधिक आयु वर्ग के लोग मुख्यतः 5-7 साल या उससे अधिक समय से प्रवासित हैं, जिससे पता चलता है कि वे अब अपने काम में स्थायित्व की ओर बढ़ चुके हैं। कुल मिलाकर, छोटे आयु वर्ग के लोग प्रवास के शुरुआती चरण में होते हैं, जबकि बड़े आयु वर्ग के लोग लंबे समय तक अपने काम और स्थान में स्थिर हो चुके होते हैं।

निष्कर्ष :-

गृहस्थ घरेलू महिला कामकाजी प्रवासियों के संदर्भ में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ये महिलाएं न केवल अपने परिवारों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करती हैं, बल्कि वे सामाजिक और आर्थिक विकास में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि, इन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि कम वेतन, काम के असुरक्षित माहौल, और सामाजिक अस्वीकृति। इनकी स्थिति को सुधारने के लिए, सरकार और समाज को मिलकर प्रभावी नीतियों और कानूनों को लागू करने की आवश्यकता है, जो इनकी सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा करें। घरेलू काम को एक पेशेवर दृष्टिकोण से देखना और इसे सम्मानजनक कार्य मानना भी आवश्यक है। महिलाओं को रोजगार और शिक्षा के अवसर प्रदान करना, उनकी स्थिति में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इस प्रकार, घरेलू कामकाजी प्रवासी महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ाना, उनके अधिकारों को मान्यता देना और उचित कार्य स्थितियों का निर्माण करना, उनके जीवन को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ :

1. Banerjee, B. (1984). Rural-to-urban migration and conjugal separation: an Indian case study. *Economic Development and Cultural Change*, *32*(4), 767-780.
2. Bhagat, R. B., Roy, A. K., & Sahoo, H. (Eds.). (2020). *Migration and urban transition in India: a development perspective*. Taylor & Francis.
3. Bogue, D. J. (1962). *Urbanization and migration in India*.
4. Chakraborty, A. (2019). Unorganised Labour Migration in India with Special Reference to Changing Pattern of Socio-Economic Conditions in Colonial Epoch. International Journal of Advances in Management and Economics, 51–53.
5. Dasgupta, B., & Laishley, R. (1975). Migration from villages. *Economic and Political Weekly*, 1652-1662.
6. Greenwood, M. J. (1971). An analysis of the determinants of internal labor mobility in India. *The Annals of Regional Science*, *5*, 137-151.
7. KALASH, K. Impact of Out Migration on Socio Economic Changes A Case Study of Sitamarhi District.
8. Tripathi, S.N. (1991). Informal Women Labourers in India. New Delhi: Discovery Publishing House
9. शर्मा, डॉ. एम.के. (2010), 'भारतीय समाज में नारी, पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
10. सक्सेना, एस.सी. (1992), 'श्रम समसयें एवं सामाजिक सुरक्षा', रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ

■ ■ ■